

मजा या सजा-2

प्रेषक : जो हन्टर

सहयोगी : कामिनी सक्सेना

कामिनी की इस घटना को दो दिन बीत गये थे। इन दो दिनों में मैं सुधीर से दो बार मिल चुका था। कामिनी के कारण उससे मेरी भी दोस्ती थी। मैंने उसे यह नहीं मालूम होने दिया कि कामिनी की चुदाई के बारे में मुझे मालूम है। आज सवेरे ही मैंने सुधीर के घर जाने की योजना बनाई। इस बारे में मैंने नेहा को बता दिया था कि सुधीर की मां और बहन आई हुई हैं, उनसे मिलने जा रहा हूँ।

मैं कॉलेज जाने से पहले उसके घर चला गया। बाहर बरामदे में एक सुन्दर सी लड़की झाड़ू लगा रही थी। मैंने अन्दाज़ा लगाया कि यह सुधीर की बहन होगी। जैसे ही मैं फ़ाटक के अन्दर घुसा ... उसने मेरी तरफ़ देखा और देखती ही रह गई।

मैंने उसे नमस्ते किया तो वो कुछ नहीं बोली। मैं सामान्यतया मुस्कुराता रहता हूँ "मैं सुधीर का दोस्त हूँ "

"जी आईये " वो कुछ शरमाती सी बोली। मुझे वो अन्दर ले गई और कहा - "आप बैठिये मैं पानी लाती हूँ।"

"आप उसकी बहन है ना" मैंने मुस्कराहट बिखेरते हुए कहा।

वो एकदम से शरमा गई और मुझे तिरछी निगाहों से देखती हुई अन्दर चली गई। उसकी पतली छरहरी काया और उसके उभार और कटाव भरे पूरे थे। किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर सकते थे। वो पानी ले कर आ गई।

"आपका नाम जान सकता हूँ?"

उसका अन्दाज़ कुछ अलग सा था। मुझे लगा कि वो उमर में सुधीर से बड़ी है।

इतने में एक मधुर अवाज और आई, "ये मेरी मम्मी है मैं सुधीर की बहन हूँ दिव्या!"

मैं बुरी तरह से चौंक गया ये कैसे हो सकता है? "जीमाफ़ करना आप तो इतनी छोटी लगती है कि मैं तो समझा कि!"

"आप ठीक कह रहे हैं मेरी कम उम्र में ही शादी हो गई थी फिर ये भी एक एक्सीडेंट में गुजर गये थे" (उसका मुझे घूरना बन्द नहीं हुआ।) वो एकटक मुझे देखे जा रही थी।

"ओह!!! माफ़ करना यह सुन कर दुख हुआ पर आप तो दिखने में किसी लड़की जैसी ही लगती हैं" वो फिर से शरमा गई

"आप चाय पीजिये इतने में सुधीर आ जायेगा!" उसके हाव भाव ये बता रहे थे कि मैं उसे अच्छा लग रहा हूँ मैंने सोचा कि और आगे बढ़ा जाये !

"आप अभी ही इतनी सुन्दर लग रही हैं तो जब बाहर जाती होगी तो और भी अच्छी लगती होंगी!" उसका चेहरा लाल हो उठा। बिल्कुल किसी कुंवारी लड़की की तरह वह अदाएँ दिखा रही थी। फिर से उसने मुस्कराते हुए मुझे देखा मेरी हिम्मत बढ़ने लगी। वो सामने किचन में चली गई। मैं भी उसके पीछे पीछे किचन में आ गया।

मैंने हिम्मत करके उसकी कमर पर हाथ रखा। उसने तुरन्त ही पलट कर मुझे देखा और बोली- "यह क्या कर रहे रहे हो"

"सॉरी मैं अपने आपको रोक नहीं पाया, क्योंकि आप मैं गजब का आकर्षण है !"

वो मुस्करा दी। मेरी हिम्मत और बढ़ गई।

"आप बहुत खूबसूरत हैं " उसके चेहरे पर पसीन छलक आया।

"आप भी तो हैं हाय" उसके मुँह से निकल पड़ा। मेरे हाथ उसकी चिकनी कमर पर फिसलने लगे। उसका शरीर कांप उठा, वो लरजने लगी और झूठ में ही मेरे से दूर होने की कोशिश करने लगी।

"जीचाय" उसका चेहरा तमतमा रहा थाहम चाय ले कर फिर से बैठक में आ गये"आपका नाम क्या है?"

"मेरा नाम जो हन्टर हैऔर आपका?"

"जीम....में सरोज" वो हिचकती हुई सी बोली "आप दिव्या को रोज पढ़ाने आयेंगे ना ऐसा सुधीर कह रहा था!" मैं सकपका गया। क्योंकि पढ़ाने की बात मुझे नहीं पता थी।

"मैं आपको सरोज ही कहूँगा क्योंकि आपको आण्टी कहना आपके साथ ज्यादाती होगी !" सुनते ही उसने अपना चेहरा हाथों में छुपा लिया।

"पर वो दिव्या?"

"हां हां मैं आ जाऊँगाउसे भी पढ़ा दूँगा" मैंने मौके को हाथ से गंवाना उचित नहीं समझा। मैंने चाय समाप्त की और खड़ा हो गया। वो भी खड़ी हो गई और मेरे समीप आ गई। मैंने इधर उधर देखा कि कोई नहीं है तो मैंने सरोज का हाथ पकड़ लिया। वो खुद ही धीरे से मेरे सीने से लग गई। मैंने उसे लिपटाते हुए अपनी बाहों में कस लिया। उसने अपना चेहरा ऊपर उठा लिया और अपनी आंखे बन्द कर ली। मुझे कुछ समझ में नहीं आया पर मेरे शरीर में तरावट आने लगी थी, वासना जागने लगी थी। स्वतः ही मेरे होंठ आप ही उसके होंठों की ओर बढ़ गये। कुछ ही देर में हम दोनों एक दूसरे के होंठ चूस रहे थे। मैंने अब उसके उरोजो को थाम लिया। वो कसक उठी।

"हाय मत करो सीsss हाय रे" उसके मुख से सिसकारी निकल पड़ी। मैंने धीरे धीरे उसके स्तन दबाने और मसलने चालू कर दिये। उसकी बाहों का कसाव और बढ़ चला था। अब मैंने एक हाथ से उसके चूतड़ दबाने शुरू कर दिये थे। अब उसका भी एक हाथ मेरे लण्ड पर आ चुका था और कस कर पकड़ लिया था।

"हाय छोड़ दो ना आssssह क्या कर रहे हो?" इन्कार में इकरार थामेरा लण्ड उसने कस के पकड़ रखा था। कह तो रही थी छोड़ने को और बेतहाशा लिपटी जा रही थी। बाहर फ़ाटक की आवाज आई तो वो मेरे से छिटक के दूर हो गई

"कल सवेरे नौ बजे आना मैं इन्तज़ार करूँगी!" इतने में दिव्या अन्दर आ गई। एकबारगी तो वो ठिठक गई शायद उसने माहौल भांप लिया था। मैंने अब दिव्या को निहारा। वो एक जवान लड़की थी जीन्स पहने थी अपनी मां की तरह चुलबुली थी तो इसे पढ़ाना है लगा कि मेरी तो किस्मत अपने आप ही मेहरबान हो गई है आया था कि इन पर इम्प्रेसन जमा कर पटाऊँगा। पर यहां तो सभी कुछ अपने आप हो रहा था। मैं मुस्करा कर बाहर आ गया।

अगले दिन सवेरे नौ बजे मैं सुधीर के यहाँ पहुंच गया। सुधीर कहीं जाने की तैयारी कर रहा था।

"थैंक्स यार तुमने दिव्या को पढ़ाने के लिये हां कर दी मैं जरा हेप्पी से मिलने यहीं पान की दुकान तक जा रहा हूँ" कह कर वो चला गया।

दिव्या मेज़ पर बैठी पढ़ाई कर रही थी। मुझे देखते ही उसने अपने पास ही एक कुर्सी और लगा दी।

अन्दर से सरोज ने मुझे देखा और शरमाती हुई मुस्करा दी दिव्या ने फिर से एक बार इस बात को देख लिया। मैं कुछ देर तक तो पढ़ाता रहा फिर मुझे महसूस हुआ कि उसका ध्यान पढ़ाई पर नहीं मेरी ओर था।

"मुझे मत देखो इधर ध्यान लगाओ" पर दिव्या ने सीधे वार करते हुए मेरी जांघ पर हाथ रख दिया ।

"आपने कल मम्मी को किस किया था ना" वो फुसफुसाई, मैं बुरी तरह से चौंक गया।

"क्या ???क्या कहा" मैं हड़बड़ा गया

"मम्मी ने मुझे बताया था मैं और मम्मी सब बातें एक दूसरे को बताती हैं मुझे भी किस करो ना" मुझे एक बार तो समझ में नहीं आया कि ऐसे मौके पर क्या करना चाहिये.....उसके हाथ मेरे लण्ड की तरफ बढ़ रहे थे। मेरे शरीर में सनसनी फैल रही थी। अचानक वो मेरे से लिपट पड़ी। दरवाजे से सरोज सब देख रही थी। मेरी नजर ज्योंही दरवाजे पर पड़ी सरोज ने अपनी एक आंख दबा कर मुस्करा दी। मैंने इसमें उसकी स्वीकृति को समझा और दिव्या का कुंवारा शरीर मेरी आगोश में आ गया।

उसकी उभरती जवानी पर मेरे हाथ फिसलने लगे। वो बेतहाशा अब मुझे चूमने लगी। मेरा हाथ उसकी स्कर्ट में घुस पड़ा। उसकी चूत गीली हो चुकी थी। मैंने उसकी पेन्टी में हाथ डाल कर उसकी चूत दबा दी। जवाब में उसने भी मेरा लण्ड दबा दिया। सरोज ने अन्दर से इशारा किया तो मैंने उसे छोड़ दिया। दिव्या लगभग हांफते हुए अलग हो गई। उसकी आंखों में वासना के लाल डोरे लगे खिंच चुके थे। सरोज चाय बना कर ले आई।

"दिव्याकॉलेज में देर हो जायेगी तैयार हो जाओ" सरोज ने दिव्या को आंख मारते हुए कहा। दिव्या मुस्कराते हुए उठी और लहरा कर चल दी। वो समझ चुकी थी कि मम्मी अब गरम हो चुकी है अब उन्हें चुदाई चाहिये। मैंने चाय समाप्त की और प्याला मेज़ पर रख दिया।

"सरोज जरा सा और पास आ जाओ" मैंने आज मौके का भरपूर फायदा उठाने की सोचते हुए अपनी मनमोहक मुस्कराहट बिखेर दी। उसकी आंखें झुक गईं। पर उठ कर चुप से मेरी गोदी में बैठ गईं। जैसे ही वो मेरी जांघों पर बैठी उसके चूतड़ों का स्पर्श हुआ। वो अन्दर पेन्टी नहीं पहने थी। उसके लचकदार चूतड़ का स्पर्श पा कर मेरा लण्ड फुफ़कार उठा। हम दोनों अब एक दूसरे को चूम रहे थे। मेरा हाथ जैसे ही उसके बोबे पर पड़ा उसके बोबे बाहर छलक पड़े। उसके ब्रा भी नहीं पहनी थीयानि चुदने के लिये वो बिल्कुल तैयार थी। मेरा लण्ड उसके चूतड़ों पर लगने लगा था। कुछ ही देर में वो बैचेन हो उठी

"सुनो जी अब देरी किस बात की है" कह कर वो बुरी तरह लाल हो गईं। मैं उसकी इस अदा पर मर गया मैंने उसे गोदी में से उतार कर खड़ा कर दिया और अपनी पेन्ट उतार दी वो शरम से सिमटी जा रही थी पर उसने बिस्तर पर आने की देर नहीं की। उसके मन की हलचल में समझ रहा थालगतता था बरसों की प्यासी है।

मेरा लण्ड देखते ही वो मचल उठी। उसने मेरा लण्ड अपने हाथों में ले लिया और पकड़ कर दबाने लगी लण्ड की चमड़ी ऊपर नीचे करने लगी, इसके कारण मेरा सुपाड़ा रगड़ खाने लगामुझे तेज मजा आयामीठी मीठी सी गुदगुदी उठने लगी । उसने मेरी तरफ देखा मैं उसे प्यार से देख रहा था

"हाय रेमेरी तरफ मत देखो ना उधर देखो" और शरमाते हुए मेरे सुपाड़े को अपने मुँह में भर लिया। दोनों हाथों से मेरे चूतड़ भींच लिये और पूरा लण्ड मुँह में भर कर अन्दर बाहर करने लगी। सुपाड़ा जोर से चूस रही थीएक तरह से अपने मुँह को चोद रही थी। मेरे मुख से आह निकल रही थी कुछ देर तक यही सिलसिला चलता रहा।

उसने फिर कहा-"सुनो जीअब देर किस बात की है" फिर से एक बार शरमा गईं और फिर वो कहने लगी, "तुम्हें देखते ही मुझे लगा कि तुम मेरे लिये ही बने होतुम्हारे में गजब की कशिश है !"

"सरोज तुम बहुत सेक्सी हो देखो मुझे कैसे बस में कर लिया"

"मैं बहुत महीनों से प्यासी हूँऔर मेरी बेटी उसकी नजरें भी भटकने लगी थी मैंने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया था तब से मैंने उसे अपना राजदार बना लिया और अब हम सही लड़का देख कर दोनों ही अपनी प्यास शान्त करती हैं"

मुझे उसकी बातों से कोई सरोकार नहीं था मुझे तो एक बदले दो दो चूत बिना मांगे ही मिल रही थी।

वो कहती जा रही थी"सुधीर से मैं परेशान रहती हूँ ! वो जाने क्या करता है? जाने कहां से नशे की चीजे लाता है और बेचता है हमारे मना करने पर वो हम दोनों को पीटता है।"

सरोज की सारी बातें में ध्यान में रख रहा था पर उसे यही दर्शा रहा था कि मैं सेक्स में ही रुचि ले रहा हूँ।

"बस सरोज अब चुप हो जाओ, मैं अब से तुम्हारे साथ हूँ मजे लो अबमेरा देखो न कितना बुरा हाल है" मैंने उसकी चूत पर अपना तन्नाया हुआ लण्ड का दबाव देते हुए कहा। उसका शरीर वासना से कसक रहा था। उसकी तड़प मुझे महसूस हो रही थी। मैंने उसके बोबे दाबते हुए नीचे जोर लगाया लण्ड चूत में उतरता चला गया। उसकी कसी हुई चूत मेरे लण्ड के चारों ओर मीठा सा घर्षण दे रही थी। उसने अपनी चूत को और ऊपर की ओर उभार ली। मेरा लण्ड अभी भी थोड़ा बाहर था। उसके मुख से सिसकारी निकलती जा रही थी। मुझे लगा कि मेरा लण्ड उसकी चूत की पूरी गहराई में घुस चुका था। पर लण्ड अभी भी बाहर था।

"अब धीरे से बाहर निकाल कर अन्दर और दबाओ" उसने सिसकते हुए कहा।

मैंने अपना लण्ड थोड़ा सा बाहर निकाला और अन्दर और दबा दिया। उसे हल्का स दर्द हुआ फिर भी बोली, "ऐसा और करो"

"पर आपको दर्द हो रहा है ना?"

इसी दर्द में तो मजा हैपूरा घुसेगा तो ही शान्ति मिलेगी ना!" उसने दर्द झेलते हुए कहा।

मैंने फिर से लण्ड दबाया पर इस बार झटके से पूरा डाल दिया। उसके मुख से हल्की सी चीख निकल गई।

"हाय रे! मर गई! ये हुई ना मर्दों वाली बात! बस अब थोड़ा रुको!" वो अपने स्टाईल में बताते हुए चुदवाने लगी।

उसने कहा, "अब मेरी चूत के नीचे तकिया रख दो फिर बस एक धक्का और"

"देखो बहुत दर्द होगा"

"आज होने दोबिना दर्द के मजा नहीं आता है"

मैंने उसकी गाण्ड के नीचे तकिया घुसा दिया , उसकी चूत ऊपर की ओर उठ गई और मैंने इस बार पूरा जोर लगा कर लण्ड को चूत में गड़ा दिया। दर्द से उसने दांत भींच लिये और मैंने अब उसके बोबे थामें और मसलते हुए धीरे धीरे पर गहराई तक चोदने लगा। वो पसीने में नहा चुकी थी। उसका सारा बदन उत्तेजना से कांप रहा था। मैं भी अपना आपा खोता जा रहा था। उसकी टाईट चूत मेरे लण्ड को लपेट कर सहला रही थी।

उसने कहा, "राजा तेजी से चोदो नाआज मुझे मस्त कर दो"

मेरे धक्के तेज होते गये। उसकी सिसकारियाँ बढ़ती गई। वो अपने पूरे जोश से अपने चूतड हिला हिला कर चुदवा रही थी। अचानक मुझे लगा कि उसका कसाव मेरे पर बढ़ गया है और वो झड़ने लगी।

मैंने उस ओर ध्यान नहीं दियाऔर चुदाई जारी रखी। झड़ कर भी वो उसी जोश में चुदवाती रही मैंने उसे चूम चूम कर उसका चेहरा अपने थूक से गीला कर दिया था। वो भी बराबरी से मुझे चाट रही थी। अचानक उसने मुझे इशारा किया और वो मेरे ऊपर आ गई। आसन बदल लिया। वो मेरे पर झुक गई और लण्ड चूत में घुसा कर जबरदस्त धक्के मारने लगी। उसके बोबे जोर जोर से उछल रहे थे। मैंने दोनों बोबे को कस के मसलना शुरू कर दिया। उसके धक्के इतने जबरदस्त थे कि उसे भी शायद तकलीफ हो रही होगी। लगता था जन्म-जन्म की प्यास बुझाना चाहती थी।

कुछ ही देर में मैं भी चरमसीमा पर पहुंच गया और और चूत के अन्दर ही लण्ड ने अपनी पिचकारी छोड़ दी। वो कब झड़ गई मुझे पता नहीं चला। पर हाफते हुए मेरे पर लेट गई। उसका जिस्म पसीने में तर था। हम दोनों एक दूसरे से लिपटे हुए कुछ देर पड़े रहे। फिर मैं धीरे से

उठा।

"सरोज तुम तो चुदाई में मस्त हो मेरा सारा माल निकाल दिया" सरोज फिर से शरमा गई।
"मैं तो दो बार झड़ गई हाय राम मेरा पेटीकोट तो दे दो" उसने झट से कपड़े पहन लिये।

मैंने भी कपड़े पहने और पूछा, "बाथरूम किधर है" उसने उंगली से इशारा कर दिया। मैं बाथरूम में गया और अपना मुख धो लिया तभी मेरी नजर हैंगर पर टंगे जैकेट पर पड़ी। वो सुधीर का था। मैंने तुरन्त उसकी तलाशी ली। उसमें कोई शायद नशे की कोई चीज थी। उसमें एक पिस्तौल भी था। सारी चीजे यथावत रख कर मैं बाहर आ गया।

"अच्छा अब मैं चलता हूँ" उसने मुस्करा कर हामी भर दी

मैं जैसे ही बाहर निकला, मेरा मन एकदम धक से रह गया, दिव्या एक कुर्सी पर बैठी कोई मेगज़ीन देख रही थी।

"तू तू तुम कॉलेज नहीं गई?"

"और यहां की चौकीदारी कौन करता??? कल आओगे ना" उसने एक सेक्सी नजर डालते हुए कहा।

"कल तुम्हारी बारी है तैयार रहना!" मैं धीरे से झुक कर बोला...

उसकी मुस्कान और झुकी झुकी नजरें उसकी स्वीकृति दर्शा रही थी।

समय देखा साढ़े दस बज रहे थे मैंने अपनी मोटर साईकल उठाई और सीधे पुलिस स्टेशन पहुंचा। अंकल मेरा ही इन्तज़ार कर रहे थे।

मैंने उन्हें एक एक करके सब बताना शुरू कर दिया, "अंकल, सुधीर के अलावा, हैप्पी, सुरजीत और मोन्टी हैं, चारों एक ही गांव के हैं हैप्पी ट्रूसीटर चलाता है और नशे की चीजें बेचता है। मोन्टी किसी एजेन्ट से ये नशीली चीजे लाता है। सुरजीत अवैध दारू के पाऊच लाता है और पानवाले के पास रखता है। सुधीर के पास भी घर पर ये नशे की चीजे हैं और एक पिस्तौल भी है। और" सारी रिपोर्ट बताता रहा और रिपोर्ट देने के बाद मैंने उनसे एक दिन का समय और मांगा।

अंकल ने सारी बातें समझ ली थी। अंकल शहर के एस पी थे उन्हें शक तो पहले ही था पर नेहा के कहने पर उन्होंने कार्यवाही का वचन दिया था। उन्होंने जरूरी बातें अपनी डायरी में नोट कर ली।

मैं यहाँ से सीधा कामिनी से मिलने नेहा के घर चला आया था आज वो बहुत बेहतर लग रही थी चल फिर रही थी उसमें ताकत आ गई थी।

मैंने जब अपनी बात उसे बताई तो वह सन्तुष्ट नजर आई, पर खुद को रोने से नहीं रोक पाई। अंततः वो फ़फ़क के फिर रो से पड़ी।

टूटा हुआ मन, आहत भावनाएं !

२८ मई, २००९

jjoehunter@gmail.com

kaminisaxena@gmail.com

पोलीथीन का प्रयोग कम से कम करें !

वृक्ष लगाएँ : पृथ्वी बचाएँ

असुरक्षित यौन-सम्बंध से ऐड्स हो सकता है !

